संपादकीय

बढ़ने लगी है विदेशी छात्रों की तादाद

वर्ष 2030 तक भारत आने वाले विदेशी छात्रों की संख्या में हर साल लगभग आठ प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी का अनुमान है। जहां वर्ष 2022 में 39 हजार से अधिक विदेशी छात्र भारत आए थे, वहीं वर्तमान में लगभग 200 देशों के 72 हजार से अधिक विदेशी छात्र भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत हैं। हाल ही में 25 मार्च को वैश्विक उच्च शिक्षा सेवाओं का मूल्यांकन करने वाली अग्रणी कंपनी ब्रिटेन स्थित क्यूएस साइमंड्स द्वारा प्रकाशित 16वीं वार्षिक रिपोर्ट में वर्ष 2025 में वर्ल्ड यूनिवर्सिटी की रैंकिंग में भारतीय शैक्षणिक संस्थानों का अभूतपूर्व प्रदर्शन रहा है। भारत ने इस साल विभिन्न विषयों और संकाय क्षेत्रों में शीर्ष 50 में से 27 स्थान हासिल किए हैं, जो कि पिछले वर्ष 2024 में दर्ज किए गए 12 स्थानों की तुलना में दोगुने से भी अधिक हैं। कह सकते हैं कि यह रैंकिंग भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली की बढ़ती वैश्विक साख और भविष्य की संभावनाओं को दर्शाती है। रिपोर्ट के अनुसार भारत एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा गंतव्य देश बनने की ओर अग्रसर है। साथ ही वर्ष 2030 तक भारत आने वाले विदेशी छात्रों की संख्या में हर साल लगभग आठ प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी का अनुमान है। जहां वर्ष 2022 में 39 हजार से अधिक विदेशी छात्र भारत आए थे, वहीं वर्तमान में लगभग 200 देशों के 72 हजार से अधिक विदेशी छात्र भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययनरत हैं। अब केंद्र सरकार ने 'स्टडी इन इंडिया' पहल के तहत 2030 तक प्रतिवर्ष 2 लाख विदेशी छात्रों को आकर्षित करने का लक्ष्य रखा है। नि:संदेह, भारत वैश्विक शिक्षा केंद्र के रूप में स्थापित होने की राह पर आगे बढ़ रहा है। अब हर साल बड़ी संख्या में गुणवत्तापूर्ण कौशल, अनुसंधान सुविधाओं और उच्च शिक्षा के बाद विदेश में ही करिअर के अवसरों को पाने के मद्देनजर विदेशों में उच्च शिक्षा के लिए जाने वाले भारतीय छात्रों की संख्या लगातार घट रही है। भारत में विदेशी छात्रों की संख्या बढ़ने की कई वजहें हैं। सरकार ने पिछले कुछ सालों में 'नेशनल एजुकेशन पॉलिसी' (एनईपी) 2020 के जरिए शिक्षा व्यवस्था में सुधार किए गए हैं। एनईपी के तहत एजुकेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर अपग्रेड करने, मान्यता देने की व्यवस्था मजबूत करने, रिसर्च और इनोवेशन को बढ़ावा देने और डिजिटल एजुकेशन का विस्तार करने का अभियान लगातार आगे बढ़ाया जा रहा है। ऐसे गुणात्मक सुधार से भारत के शिक्षा संस्थानों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक मान्यता मिल रही है। वैश्विक स्तर की शिक्षा व्यवस्था को भारत में लाने के मद्देनजर 19 विदेशी यूनिवर्सिटीज को भारत में कैंपस स्थापित करने की इजाजत दी गई है।

विनोद शर्मा, संपादक

जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता

बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम और पारंपरिक भ्रांतियां

बेटी से काम नहीं चलता समाज में यह धारणा गहरी जड़ें जमाए बैठी है कि बेटा वंश आगे बढ़ाता है, बुढ़ापे का सहारा बनता है और अंतिम संस्कार करता है। इसलिए लोग बेटे की चाह में बच्चे पैदा करते रहते हैं। आज के समय में बेटियाँ हर क्षेत्र में बेटों से आगे निकल रही हैं। चाहे सेना हो, अंतरिक्ष हो, खेल हो या प्रशासन — बेटियाँ हर जगह अपना परचम लहरा रही हैं। कई बेटियाँ अपने माता-पिता की बुढ़ापे में बेटों से बेहतर देखभाल करती हैं। रही बात अंतिम संस्कार की, तो आज कानूनी रूप से बेटी को भी यह अधिकार प्राप्त है। जो लोग बेटे की चाह में पाँच-छह बेटियाँ पैदा कर देते हैं, वे न उन बेटियों को अच्छी शिक्षा दे पाते हैं, न अच्छा जीवन। यह कोई समझदारी नहीं, बल्कि मूर्खता है। सच्चाई यह है कि आज के समय में ज्यादा बच्चे होने का मतलब ज्यादा सहारा नहीं, बल्कि ज्यादा खर्चा और ज्यादा चिंता है। अगर आप दो बच्चों को अच्छी शिक्षा देते हैं, उन्हें संस्कारवान बनाते हैं, तो वे दो बच्चे दस बच्चों से बेहतर देखभाल करेंगे।

डॉ. शैलेश शुक्ला

भारत आज दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है। 2024 में भारत की जनसंख्या लगभग 145 करोड़ को पार कर गई है। यह एक ऐसी समस्या है जो देश के विकास, संसाधनों, पर्यावरण और लोगों के जीवन स्तर पर सीधा असर डालती है। एक तरफ जहाँ देश तरक्की की राह पर आगे बढ़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ बढ़ती आबादी उस तरक्की को खा जा रही है। सड़कों पर भीड़, अस्पतालों में लंबी कतारें, स्कूलों में जगह की कमी और बेरोजगारी– ये सब बढ़ती जनसंख्या के प्रत्यक्ष परिणाम हैं। इस लेख में हम बढ़ती जनसंख्या से होने वाले नुकसानों को समझेंगे और उन पारंपरिक विचारधाराओं का खंडन करेंगे जो अधिक संतान पैदा करने को प्रेरित करती हैं। बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम- गरीबी और भुखमरी- जब किसी परिवार में कमाने वाला एक होता है और खाने वाले दस, तो गरीबी अपने आप आ जाती है। यही बात पूरे देश पर लागू होती है। भारत में उत्पादन बढ़ रहा है, लेकिन उससे कहीं ज्यादा तेजी से आबादी बढ़ रही है। नतीजा यह होता है कि प्रति व्यक्ति आय कम रह जाती है। करोड़ों लोग आज भी दो वक्त की रोटी के लिए जूझ रहे हैं। गरीबी का सीधा संबंध अधिक जनसंख्या से है। बेरोजगारी - हर साल लाखों युवा पढ़-लिखकर नौकरी ढूँढने निकलते हैं, लेकिन नौकरियाँ उतनी तेजी से नहीं बढ़तीं

जितनी तेजी से लोग बढ़ रहे हैं। एक सरकारी पद के लिए लाखों आवेदन आते हैं। इससे निराशा, अपराध और सामाजिक अस्थिरता बढ़ती है। अगर जनसंख्या नियंत्रित होती तो हर हाथ को काम मिलना आसान होता। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं पर बोझ- सरकारी स्कूलों में एक कक्षा में 60-70 बच्चे बैठते हैं, जहाँ शिक्षक का ध्यान हर बच्चे पर देना असंभव हो जाता है। सरकारी अस्पतालों में मरीजों की इतनी भीड़ होती है कि डॉक्टर को एक मरीज को देखने के लिए मुश्किल से दो मिनट मिलते हैं। बढ़ती आबादी के कारण सरकार चाहकर भी हर व्यक्ति तक अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा नहीं पहुँचा पाती ज्यादा लोग यानी ज्यादा जमीन की जरूरत, ज्यादा पानी की खपत, ज्यादा प्रदूषण और ज्यादा कचरा। जंगल काटकर बस्तियाँ बसाई जा रही हैं, नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, भूजल का स्तर गिर रहा है। जलवायु परिवर्तन का एक बड़ा कारण अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि है। अगर यही रफ्तार जारी रही तो आने वाली पीढ़ियों को साफ पानी और स्वच्छ हवा भी नसीब नहीं होगी। आवास और शहरीकरण की समस्या- शहरों में जगह कम पड़ रही है। मुंबई, दिल्ली जैसे शहरों में झुग्गी-झोपड़ियों की संख्या बढ़ती जा रही है। लोग तंग और अस्वच्छ जगहों पर रहने को मजबूर हैं। ट्रैफिक जाम, पानी की कमी और बिजली की समस्या – ये सब अधिक जनसंख्या का ही नतीजा है। अपराध और सामाजिक अशांत- जब लोगों की बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं होतीं तो अपराध बढ़ता है। भूख, बेरोजगारी और निराशा लोगों को गलत रास्ते पर धकेलती है। अधिक जनसंख्या वाले इलाकों में चोरी, लूट और हिंसा की घटनाएँ ज्यादा देखी जाती हैं। पारंपरिक भ्रांतियाँ और उनका खंडन- हमारे समाज में कई ऐसी पुरानी मान्यताएँ प्रचलित हैं जो लोगों को अधिक संतान पैदा करने के लिए प्रेरित करती हैं। इन मान्यताओं की जड़ें धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं में हैं। आइए इन भ्रांतियों को एक-एक करके समझें और उनका तर्कपूर्ण खंडन करें। संतान से मोक्ष मिलता है- यह सबसे प्रचलित मान्यता है कि पुत्र के बिना मोक्ष नहीं मिलता। कहा जाता है कि पुत्र पिंडदान करेगा तो पूर्वज मुक्त होंगे। इस मान्यता के कारण लोग बेटे की चाह में कई संतानें पैदा करते रहते हैं।अगर हम धर्मग्रंथों को गहराई से पढ़ें तो मोक्ष कर्म, ज्ञान और भक्ति से मिलता है, संतान की संख्या से नहीं। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मोक्ष का मार्ग निष्काम कर्म और आत्मज्ञान है। कोई भी धर्मग्रंथ यह नहीं कहता कि जिसके ज्यादा बच्चे होंगे, उसे ज्यादा पुण्य मिलेगा। मोक्ष व्यक्ति के अपने आचरण, सदाचार और आध्यात्मिक साधना पर निर्भर करता है। अगर संतान से ही मोक्ष मिलता तो संन्यासियों, साधुओं और ऋषि-मुनियों को मोक्ष कैसे प्राप्त होता? शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद – इन सबने संतान नहीं उत्पन्न की, फिर भी ये महापुरुष माने गए। बेटा जरूरी है।

सरजमीं जिसमें निरंतर संघर्ष व संकटों से उबरने का है जज्बा

इन दिनों ईरान का अमेरिका व इस्राइल से युद्ध चल रहा है। दरअसल प्राचीन दौर से, जब इस देश को फारस कहते थे, यह लगातार ऐसे संघर्षों, संकटों को झेलता रहा है। ऐसे में लगातार खुद में बदलाव लाना और उबरकर आगे बढ़ना ईरान के लोगों की फितरत रही है। मैं ईरान हूं। कुछ लोग मुझे आज भी प्यार से फारस कहते हैं तो कुछ मुझे मेरे आधिकारिक नाम इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान से पुकारते हैं। मेरी धरती पश्चिम एशिया के हृदय में फैली हुई है। मेरे पश्चिम में इराक, उत्तर-पश्चिम में तुर्की, अजरबैजान और आर्मेनिया, उत्तर में कैस्पियन सागर, उत्तर-पूर्व में तुर्कमेनिस्तान, पूर्व में अफगानिस्तान, दक्षिण-पूर्व में पाकिस्तान और दक्षिण में फारस तथा ओमान की खाड़ी मुझे घेरती हैं। मेरी आबादी लगभग 9 करोड़ है। मेरा दिल तेहरान में धड़कता है। मेरी पहचान केवल मेरी सीमाओं या जनसंख्या से नहीं है। मैं समय की उन गहराइयों से उभरा हूं, जहां इतिहास और सभ्यता ने पहली बार अपनी आवाज पाई थी। सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व में मीड्स ने मुझे पहली बार एक रूप दिया, एक संगठित पहचान दी। फिर साइरस महान ने मेरे भीतर अचेमेनिड साम्राज्य की नींव रखी। लेकिन हर शक्ति की तरह, मैंने भी पराजय का स्वाद चखा। सिकंदर महान आया और उसने मेरे उस गौरवशाली साम्राज्य को तोड़ दिया। मैं फिर उठा। पार्थियन और फिर ससानी साम्राज्य के रूप में। ससानी काल मेरा स्वर्ण युग था। मैं प्राचीन काल से ही ज्ञान और सभ्यता का केंद्र रहा हूं। लेखन, कृषि, शहरीकरण, धर्म और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में मैंने दुनिया का मार्गदर्शन किया है। कभी मैं जोरोआस्ट्रियन धर्म का प्रमुख केंद्र था। 7वीं शताब्दी में जब मुस्लिम सेनाएं आई, तो मैंने इस्लाम को अपनाया इसके बावजूद, मैंने अपनी सांस्कृतिक आत्मा को जीवित रखा। फिर से मैंने साहित्य, दर्शन, गणित, चिकित्सा और कला के क्षेत्रों में नयी ऊंचाइयां हासिल कीं। उसी दौर में मेरी फारसी भाषा और संस्कृति ने फिर से जन्म लिया। मध्यकाल में सेल्जुक और ख्वारज़्मियन शासकों का दौर देखा और फिर मंगोलों का आक्रमण सहा। इसके बावजूद, मैं फिर से उठा। 14वीं शताब्दी में तैमूर के नेतृत्व में मैंने पुनर्जागरण का अनुभव किया। अंततः, 16वीं शताब्दी शिया इस्लाम को मेरी पहचान बनाया। अठारहवीं शताब्दी में मैं एक प्रमुख ताकत बनकर उभरा। फिर काजार वंश के समय आंतरिक संघर्षों और बाहरी दबावों के बीच जूझता रहा। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में संवैधानिक क्रांति के रूप में मेरे भीतर बदलाव की एक नयी लहर उठी। फिर 1925 में रजा शाह पहलवी ने सत्ता संभाली और आधुनिकीकरण की शुरुआत की। सड़कों, रेल, उद्योग और शिक्षा में सुधार हुआ, लेकिन शक्ति कुछ हाथों में केंद्रित हो गई। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1941 में ब्रिटेन और सोवियत संघ ने आक्रमण किया। रजा शाह को पद छोड़ना पड़ा। उनके बेटे मोहम्मद रजा पहलवी ने मेरी बागडोर संभाली। 1953 में तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण करने की कोशिश की गयी। लेकिन अमेरिका और ब्रिटेन के समर्थन से हुए तख्तापलट ने इस प्रयास को रोक दिया और शाह की सत्ता को और मजबूत कर दिया। फिर आया 1979। मेरे लोगों ने राजशाही को समाप्त कर दिया और अयातुल्ला रुहोल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में मैंने खुद को एक इस्लामिक गणराज्य के रूप में पुनः स्थापित किया। लेकिन शांति मुझे ज्यादा देर तक नहीं मिली। 1980 में इराक ने मुझ पर हमला किया। मैं आठ साल तक युद्ध में उलझा रहा। आज मैं एक इस्लामी गणराज्य हूं, जहां सर्वोच्च नेता के पास अंतिम सत्ता होती है। मेरे यहां चुनाव होते हैं, लेकिन हर निर्णय जनता के हाथ में नहीं होता। मुझ पर मानवाधिकारों के उल्लंघन, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध के आरोप लगते रहे हैं। आर्थिक रूप से मैं बेहद समृद्ध संसाधनों वाला देश हूं। मेरे पास दुनिया के दूसरे सबसे बड़े प्राकृतिक गैस भंडार और तीसरे सबसे बड़े तेल भंडार हैं। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय ने मेरी अर्थव्यवस्था को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। मेरा परमाणु कार्यक्रम भी दुनिया की निगाहों में है। जबकि मैं लगातार यह कहता हूं कि मेरा उद्देश्य केवल शांतिपूर्ण है। मैं आज भी अपने अतीत, अपने संघर्षों और अपने भविष्य के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रहा हूं। हाल के वर्षों में इस्राइल और सऊदी अरब के साथ मेरा तनाव लगातार बढ़ता गया। जून 2025 में हुए इस्राइल के हमलों ने स्थिति को और गंभीर बना दिया। मेरे यहां विरोध प्रदर्शन हुए। 28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इस्राइल ने मुझ पर हमला कर दिया। इन हमलों ने मेरे संघर्ष को और तेज कर दिया। इन हमलों में सर्वोच्च नेता अली खामेनेई की हत्या ने देशवासियों को हिलाकर रख दिया। उनके बेटे मोजतबा खामेनेई को नया सर्वोच्च नेता बनाया गया। अभी तो मैं हमले सह रहा हूं और जवाबी हमले कर रहा हूं।

नवकार नगर में लगेगा पांच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

पांच दिवसीय शरीर शुद्धि प्राकृतिक चिकित्सा शिविर दो अप्रैल से

पीपुल्स प्रवक्ता, खण्डवा।

खण्डवा के नवकार नगर स्थित नक्षत्र गार्डन में अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रेरणा व लायन्स क्लब खण्डवा के सहयोग से पाँच दिवसीय शरीर शुद्धि प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।जानकारी देते हुए समाजसेवी नारायण बाहेती व सुनील जैन ने बताया कि 2 अप्रैल से 6 अप्रैल तक आयोजित शिविर में देव संस्कृति विश्व विद्यालय से प्रशिक्षित व वायु सेना में अपनी सेवा दे चुके ,प्राकृतिक चिकित्सक व न्यूरोथेरेपिस्ट आचार्य सुरेश चौधरी जी द्वारा चिकित्सा की जावेगी।शिविर हेतु तैयारी बैठक का आयोजन किया गया, जिसमे आचार्य सुरेश चौधरी ने रोग मुक्त, दवा मुक्त और तनाव मुक्त जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए वजन घटाने के सरल उपाय,ब्लड प्रेशर का कारण एवं उपाय,आहार विज्ञान,शरीर शुद्धि के लाभ,रोग क्यों होते है एवं समय से पहले ही रोगों से कैसे मुक्त रहा जाए। उन्होंने कहाकि भोजन के 1 घण्टे पहले व 1 घण्टे बाद ही पानी पीना चाहिए। भोजन के समय अधिक पानी नहीं पीना चाहिए। उन्होंने 2 अप्रैल से 6 अप्रैल तक प्रतिदिन प्रातः 5 30 से 10 -30 बजे तक नवकार नगर नक्षत्र गार्डन में लगने वाले प्राकृतिक चिकित्सा शिविर की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रेरणा से ओषधि विहीन चिकित्सा से ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, कब्ज, गैस, एसिडिटी, गुटने का दर्द,कमर दर्द, सर्वाइकल, माइग्रेन आदि बीमारी का इलाज किया जावेगा। डॉ अजय लाड़ व लोकेश स्वामी ने बताया कि 1 अप्रैल को शाम 6 बजे शिविर अनुशासन गोष्ठी का भी आयोजन किया जा रहा है। नारायण बाहेती ने कहाकि बड़े -बड़े प्राकृतिक पद्धति से इलाज करने वाले चिकित्सालयों में मिलने वाली सुविधाओं का लाभ इस शिविर में दिया जाएगा।सहायक आचार्य मनोज चौरे ने बताया कि वर्ष में 1 बार शरीर शुद्धि प्राकृतिक चिकित्सा शिविर से अनेको गम्भीर रोगों से बचा जा सकता है।लोकेश स्वामी व अजय लाड़ ने कहाकि 5 दिनो मे 2 से 7 किलो तक वजन कम होकर स्वास्थ्य लाभ मिलता है।उन्होंने शिविर को बहु उपयोगी बताते हुए शिविर हेतु शीघ्र रजिस्ट्रेशन कराने की अपील की।

कपिल मिश्रा ने की देहदान की घोषणा

सक्षम, लायन्स, नेत्रदान देहदान समिति का 169 वाँ देहदान पंजीकरण सम्पन्न

पीपुल्स प्रवक्ता, खण्डवा।

बड़ाबम निवासी कपिल मिश्रा ने मरणोपरांत देहदान का घोषणा पत्र भरकर लायन्स नेत्रदान देहदान व अंगदान जनजागृति समिति को सौंपा। जानकारी देते हुए सक्षम संस्था के अध्यक्ष व लायन्स समिति के संयोजक नारायण बाहेती व समाजसेवी सुनील जैन ने बताया कि सक्षम संस्था, लायन्स क्लब खण्डवा एवं लियो क्लब खण्डवा, नेत्रदान-देहदान एवं अंगदान जनजागृति समिति द्वारा निरंतर चलाए जा रहे जनजागरण अभियान से प्रेरित होकर पूर्व में देहदान की घोषणा करने वाले हेमन्त डोंगरे की प्रेरणा से पत्नी श्रीमती माधुरी मिश्रा व पुत्र ऋषि मिश्रा की सहमति युक्त देहदान घोषणा पत्र पर स्वयं ने हस्ताक्षर कर देहदान घोषणा पत्र समिति को सौंपा। यह समिति द्वारा भरा गया 169 वाँ देहदान घोषणा पत्र है। सक्षम खण्डवा के अध्यक्ष एवं समिति संयोजक नारायण बाहेती ने जानकारी देते हुए बताया कि यह घोषणा समाज में बढ़ती मानवीय चेतना का प्रमाण है। इस अवसर पर नेत्रदानङ्कदेहदान समिति के नारायण बाहेती, डॉ. सोमिल जैन, प्रहलाद तिरोले, सुनील जैन,राजीव मालवीय, अनिल बाहेती, सुरेंद्रसिंह सोलंकी हरवंतसिंघ कुकरेजा, हेमन्त डोंगरे, घनश्याम वाधवा,लायन्स क्लब अध्यक्ष आशा उपाध्याय, राजीव शर्मा, गांधी प्रसाद गदले, डॉ. राधेश्याम पटेल, रणवीर सिंह चावला, चंचल गुप्ता,अखिलेश गुप्ता सहित सक्षम संस्था,लायन्स क्लब खण्डवा, लियो क्लब खण्डवा एवं महर्षि दधीचि समिति के पदाधिकारियों का सहयोग रहा। देहदान की घोषणा करते हुए कपिल मिश्रा ने भावुक शब्दों में कहा कि ÷मृत्यु के बाद शरीर को जलाकर नष्ट करने से बेहतर है कि वह किसी के जीवन के काम आए। हमारे नेत्र किसी को दृष्टि दे सकते हैं और हमारी देह मेडिकल विद्यार्थियों को शिक्षा देकर समाज के लिए अच्छे चिकित्सक तैयार कर सकती है। समिति के सहयोग से 22 देह मेडिकल कॉलेज को सुपुर्द की जा चुकी हैं तथा 521 दिवंगत व्यक्तियों के नेत्रदान सफलतापूर्वक कराए गए हैं।

ग्राम कोलाडिट में संत सिंगाजी महाराज की भव्य परचरी पुराण का शुभारंभ, निकली कलश यात्रा

जीव का परम लक्ष्य ही ईश्वर प्राप्ति है, स्वयं के स्वरूप को पहचानना है: दीदी चेतना भारती

पीपुल्स प्रवक्ता, खण्डवा।

धार्मिक और संस्कारों के इस खंडवा जिले में लगातार भागवत एवं अन्य कथाओं के माध्यम से धर्म की प्रभावना की जा रही है, और हम देख रहे हैं कि कथाओं के आयोजन के साथ ही कथा सुनने में युवा भी बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। समाजसेवी सुनील जैन ने बताया कि ग्राम कोलाडिट में परचरी पुराण का रविवार को शुभारंभ हुआ, इसके पूर्व चेतना दीदी के सानिध्य में कलश यात्रा भी निकली। निमाड़ की माटी की गौरव सुश्री दीदी चेतना भारती जी की सुमधुर वाणी में कथा का रसास्वादन समस्त भक्तगण कर रहे है। कथा का आयोजन समस्त ग्रामवासियों के द्वारा लोक कल्याण हेतु किया गया है। सुनील जैन ने बताया कि कलश शोभायात्रा ग्राम के मुख्य मार्ग से गुजरकर भव्य कथा पांडाल में पहुंची। आयोजन करता होने दीदी का स्वागत अभिनंदन किया। दीदीश्री ने कथा के प्रथम दिवस में कहा की माया की मार तो हर प्राणी खा रहा है और स्वयं को अशांति, कष्ट, अधोगति में पहुंचा रहा है जिन्हे काम क्रोध रूपी सर्प दिन रात सर्प करते है तथा रस्सी में सर्प प्रतीत होने वाले क्षणभंगुर सांसारिक सुखों और झूठे जगजंजाल को ही सत्य मानकर रिक्त हाथो से संसार छोड़ते है और पुन-पुन-संसार के बंधन में अलग अलग कष्ट प्रद योनियो में जन्म लेकर दुख भोगते रहते है। परंतु सिंगाजी महाराज की तरह कोई विरला महापुरुष ही होते है जो क्षुद्र को त्यागकर विराट का आलिंगन करते है, आकाश में ऐसी ध्वजा लहरा जाते है जो युग युगांतर तक सबको ऐसी प्रेरणा देते रहते है की सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त करने के अलावा भी कुछ है जहा यात्रा पूर्ण होती है, जिसे पाकर कुछ भी अनपाया नही रह जाता। जीव का परम लक्ष्य ही ईश्वर प्राप्ति है, स्वयं के स्वरूप को पहचानना है। कथा के प्रथम दिवस में ही बड़ी संख्या में श्रोता गण उपस्थित रहे।

चना उपार्जन के लिए 17 केंद्र बनाए गए

पीपुल्स प्रवक्ता, खण्डवा।

सरकार ने चने के लिए समर्थन मूल्य रु 5875/- प्रति क्विंटल निर्धारित किया है। जिला उपार्जन समिति द्वारा लिए गए निर्णय अनुसार जिले में चने के उपार्जन के लिए कुल 17 केंद्र बनाए गए हैं। कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने बताया कि चने के उपार्जन के लिए जो केंद्र बनाए गए हैं उनमें सेन्ट्रल वेयहराउस खंडवा, वर्मा वेयरहाउस कोरगला, ममता वेयरहाउस ग्राम बावडिया काजी, श्रीराम वेयरहाउस अमलपुरा, पूर्णिमा वेयरहाउस पिपलोदखास, श्री बालाजी वेयरहाउस केहलारी, जय भोले वेयरहाउस गुडीखेडा, यशवंत वेयरहाउस दोंदवाडा, सृष्टि वेयरहाउस पंधाना, मंजू पटेल वेयर हाउस ग्राम गोंडखेडा, अक्षिता एग्रो वेयरहाउस पुनासा, सीड्स एंड ग्रेन्स वेयरहाउस करोली, दिव्य शक्ति वेयरहाउस, जोगीबेड़ा, बिरदीचंद गुप्ता वेयरहाउस खेड़ी, पटेल वेयरहाउस नया हरसूद, महादेव वेयरहाउस खेरखेडा हरसूद, सिद्दी वेयरहाउस.गंभीर शामिल है। चना उपार्जन का कार्य 30 मार्च से 28 मई 2026 तक जारी रहेगा। कलेक्टर श्री गुप्ता ने निर्देश दिए हैं कि सभी केन्द्रों पर 30 मार्च से पूर्व गुणवत्ता सर्वेयर की नियुक्ति संबंधित एजेंसी द्वारा अनिवार्य रूप से की जाए। सभी सर्वेयर को प्रशिक्षण मार्कफेड द्वारा दिया जाए। चना उपार्जन केन्द्र पर गुणवत्तापूर्ण स्कंध ही उपार्जित किया जाए। यदि किसी केन्द्र पर नॉन एफ ए क्यू चना उपार्जन के लिए आता है तो उसको पृथक से रजिस्टर में एंट्री करके और किसान को समझाइश देकर अपग्रेडेशन कराया जाए। कलेक्टर श्री गुप्ता ने निर्देश दिए हैं कि सभी उपार्जन केंद्रों पर इस अपग्रेडेशन के लिए छन्ना, पंखा, क्लीनिंग ग्रेडिंग मशीन, मॉइश्चर मीटर व टेस्टिंग किट अनिवार्य रूप से उपार्जन अवधि में उपलब्ध रखी जाए। उपार्जित स्कंध की तौल के लिए उपार्जन केंद्रों पर पर्याप्त मात्रा में तौलकांटे रखे जाएं तथा चने की आवक अधिक होने की संभावना होने पर अतिरिक्त तौल कांटों की व्यवस्था की योजना पूर्व से रखी जाए। तौल कांटों का सत्यापन नापतौल विभाग से तत्काल कराया जाए।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059